शीतपित्त, उदर्द व कोठ रोग

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. माधव निदान - अध्याय 50
2. चक्रदत्त - अध्याय 52
3. भावप्रकाश उत्तरार्ध - अध्याय 55
4. योगरत्नाकर, उत्तरार्ध-शीतपित्त-उदर्द-कोठ निदानम
5. भैषज्य रत्नावली - अध्याय 55

निदान

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौ कफमारुतौ
पित्तेनसह सम्भूय बहिरन्तर्विसर्पतः १

[मा.नि.50/1]

दुश्छर्दिते स्फोटककोठकण्डूहत्वाविशुद्धिर्गुरुगात्रता च १६

[च. सि.1/16]

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौ कफमारुतौ
पित्तेनसह सम्भूय बहिरन्तर्विसर्पतः १

[मा.नि.50/5]

सम्प्राप्ति घटक

दोष	:	पित्त,कफ व् वायु
दूष्य	:	त्वक (रस) एवं रक्तादि
अधिष्ठान	:	त्वक
व्याधि	:	आशुकारी (ACUTE)

पूर्वरूप

पिपासाऽरुचिहृल्लासदेहसादाङ्गगौरवम्
रक्तलोचनता तेषांपूर्वरूपस्य लक्षणम् २

[मा.नि.50/2]

रूप

(1) **शीतपित्त**

वरटीदष्टसंस्थानः शोथः संजायते बहिः
सकराडूस्तोदबहुलश्छर्दिर्ज्वरविदाहवान् ३

उदर्दमिति तं विद्याच्छीतपित्तमथापरे
वाताधिकं शीतपित्तमुदर्दस्तु कफाधिकः ४

[मा.नि.50/3-4]

(2) **उदर्द**

सोत्सङ्गैश्च सरागैश्च कण्डूमद्भिश्च मण्डलैः
शैशिरः कफजो व्याधिरुदर्द इति कीर्तितः ५

[मा.नि.50/5]

(3) **कोठ**

असम्यग्वमनोदीर्ण पित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः
मण्डलानि सकण्डूनि रागवन्ति बहूनि च
उत्कोठः सानुबन्धश्च कोठ इत्यभिधीयते ६

[मा.नि.50/5-6]

सापेक्ष निदान

शीतपित्त	उदर्द	कोठ
1. वताधिक्यता	कफ प्रधान	कफ-रक्त प्रधान
2. तोद(पीड़ा) अधिक	कण्डु व् वमन	कण्डु अधिक
3. किंचित मण्डलोत्पत्ति	आवस्थिक मंडलोत्पत्ति	आवस्थिक रक्ताभ मंडलोत्पत्ति
4. शीत व् उष्ण के एक साथ सेवन से उत्पन्न होता है |	शिशिर ऋतू में उत्पन्न होता है	वमन (छर्दि) के अयोग या रोकने से (वर्षा ऋतू)
5. आशुकारी (Acute)	Subacute	जीर्ण (Chronic)

चिकित्सा सूत्र

"शीतपित्ते उदर्दे च तथा कोठभिधे गदे |
कृमिदद्रुहर: कार्य: शीतपित्तेअखिल: क्रम: ||
स्निग्धस्विन्नस्य संशुद्धिमादो कोष्ठे समाचरेत |
तत: कुष्ठहर: सर्वो विधियों विधिरादरात ||"

[यो.र.शीतपित्तादि चि. 14/15]

"अभ्यंग कटुतैलेन सेकश्चोष्णेन वारिणा |"   [भा. प्र. 55/8]

"कुष्ठोक्तंच क्रमं कुर्य्यादम्लपित्तघ्नमेव च |
उदर्दोक्तां क्रियान्चपि कोठरोगे समासंत: |
सर्पि: पीत्वा महातिक्तं कार्य्य शोणितमोक्षणम ||"

[च. द. 52/8]

चिकित्सा

(1) निदान परिवर्जनम

(2) संशोधन चिकित्सा

अभ्यंग : सर्षप (कटु) तैल से |
स्वेदन : उष्णोदक से सिंचन |
वमन : पटोल, निम्ब, वासा से |
विरेचन : त्रिफला, गुग्गुलु व् पिप्पलीसे या नवकार्षिक कषाय से |
रक्तमोक्षण : महातिक्त घृत का पान कराकर रक्तमोक्षण कराना चाहिए |

"उदर्दे वमनं कार्य्यं पाटोलारिष्टवारिणा |" [चक्रदत्त 52/1]

"त्रिफला पुर कृष्णाभिरविरेकश्चात शस्यते |
त्रिफलां क्षौद्रसहितां पिबेद्वा नवकार्षिकम ||"

[च.द्र.52/2]

"सर्पि: पीत्वा महातिक्तं कार्य्य शोणितमोक्षणम |"

[चक्रदत्त 52/8]

संशमन चिकित्सा

❖**रस/भस्म/सत्व**

1. सर्वतोभद्र रस
2. कामदुग्धा रस
3. सुतशेखर रस
4. चंद्रकला रस
5. शीतपित्तभंजन रस
6. अम्रता सत्व
7. प्रवाल भस्म

❖ वटी / गुग्गुलु

1. आरोग्यवर्धिनि वटी
2. नवकार्षिक गुग्गुलु
3. कैशोर गुग्गुलु

❖ चूर्ण

1. त्रिफला चूर्ण
2. त्रिकटु चूर्ण
3. पंचशिरिष चूर्ण

❖ आसव

1. अमृतारिष्ट
2. मंजिष्ठारिष्ट

❖ पाक/खंड/लेह

1. हरिद्रा खंड
2. आद्रक खंड

❖ घृत

1. महातिक्तक घृत

❖ लेप

1. दूर्वादि लेप

पथ्यापथ्य

"शालिमुद्ग कूलतथांश्च कारवेल्लामुपोदीकाम |
वेत्राग्रं तप्तनीरं च पित्तश्लेष्महराणी च ||
शीतपित्तोदर्दकोठरोगेणां पथ्यमीरितम |
स्नानमातपमम्लं च गर्वन्नं च विवर्जयेत ||"

[यो. र. शीतपित्तादि चि. पथ्यापथ्य /1-2]

THANK YOU!